RNI No. DELHIN/2012/48773 मासिक, विशेषांक 2020 वर्ष 8, अंक 11 ₹100

फेम इंडिया

सोच बदलें, समाज बदलेगा

शक्तिशाली नारी

नारायणी नमः

एशिया पोस्ट - फेम इंडिया सर्वे

Shambhu's Foundation

(To creat Endless Happiness)

Address -
F Block - sector -50 , Noida -201304
(Delhi NCR)

Contact - +91-9911976808
Email ID - ss.fameindia@gmail.com
Website- www.shambhusfoundation.in

फेम इंडिया

www.thefameindia.com

वर्ष 8, अंक 11, विशेषांक 2020

मैनेजिंग डायरेक्टर / एडिटर इन चीफ	–	राज श्री
चीफ एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर	–	उमाशंकर सोंथालिया
चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर	–	शंकर सोंथालिया
मैनेजिंग एडिटर / एक्जीक्यूटिव डॉयरेक्टर	–	श्वेता श्री
एक्जीक्यूटिव डॉयरेक्टर	–	राघवेश अस्थाना
रेजिडेंट एडिटर	–	धीरज कुमार
आर्ट डायरेक्टर	–	स्वर्ण लता

एडिटोरियल टीम –
प्रियंका श्रीवास्तव
शत्रुघ्न प्रसाद
श्वेता रश्मि
आनंद वर्मा
हेमंत सिंह
मिथिलेश पाठक
अंजू राजपूत
मनजीत सिंह
नंदन झा
पंकज चौधरी

सेल्स	–	नीतू चौधरी
मार्केटिंग	–	पंकज तिवारी
सर्कुलेशन	–	प्रवीण मिश्रा
वेब टीम	–	रश्मि सिंह
फोटो रिसर्चर	–	राजेश वर्मा
लीगल एडवाइजर	–	शरद चंद्र झा

(स्वामी , मुद्रक , प्रकाशक राजश्री द्वारा ज्योति प्रिंटर्स, ई -94, सेक्टर 6, नोएडा , गौतमबुद्ध नगर से मुद्रित एवं ए -533, जीडी कालोनी , मयूर विहार फेज -3 , दिल्ली से प्रकाशित , संपादक - राज श्री)

संपादकीय एवं मार्केटिंग ऑफिस
फेम इंडिया पब्लिकेशन प्रा.लि।
762,ब्लाक–एफ 8, सेक्टर–50, नोएडा 201304 (उ.प्र.)
फोन नं. - +91-7004450124

ई मेल: contact@thefameindia.com

RNI No. DELHIN/2012/48773

संपादकीय

यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता !

हमारे पौराणिक ग्रन्थों में भी लिखा है कि जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। भारत में प्राचीन काल से ही महिलाओं को सम्मान मिला है। नारियों ने भी अपनी विद्वता और प्रतिभा से सदैव अपने लिये महत्त्वपूर्ण स्थान हासिल किया है। वैदिक काल में नारी की प्रतिभा तथा ज्ञान अपूर्व और अद्भुत था। पुराणों में कई स्थानों पर देवी स्वरूप को कई स्थानों पर पुरुष देवताओं से ज्यादा शक्तिशाली दिखाया गया है। हर काल में स्त्री घर का प्रबंधन व नियमन करती थी। वैदिक युग स्त्री व पुरुष दोनों को ही इच्छानुसार विवाह की स्वतन्त्रता थी। स्त्रियां इच्छा अनुरूप अपना जीवन बिना विवाह किये शिक्षा में व्यतीत कर सकती थीं। वैदिक काल में ही स्त्री की शक्ति रूप में स्थापना हुई और वो शक्ति रूप में पूजनीय बनीं। स्त्री को धन, शौर्य और ज्ञान की अधिष्ठात्री बताया गया है।

हालांकि मध्य युग में दौर ऐसा भी आया कि महिलाएं पुरुषों पर आश्रित हो गयीं। उन्हें अपने मन से कुछ भी करने की मनाही थी। उनके कहीं आने-जाने, उठने-बैठने और यहां तक कि किसी से बात-चीत करने तक पर पाबंदियां थीं। कई सदियों तक इस देश में महिलाओं की स्थिति बेहद दयनीय रही। सती, पर्दा, जौहर, देवदासी जैसी प्रथाओं के प्रचलन के दौरान महिलाओं को कई तरह के आत्याचार सहने पड़े।

समय गुजरने के साथ-साथ महिलाओं ने अपनी अलग पहचान बनायी। भारत में महिलाएं अब सभी तरह की गतिविधियों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा ले रही हैं। चाहे व्यवसाय हो या राजनीति, शिक्षा हो या मीडिया, कला-संस्कृति, सेवा क्षेत्र, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, और यहां तक कि सेना भी, ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं है जिनमें स्त्रियों ने अपनी प्रतिभा न साबित की हो। वे हर क्षेत्र में बढ़-चढ़ कर हिस्सा ले रही हैं और अपना नाम कमा रही हैं।

ऐसी महिलाएं हमें भविष्य में भी प्रेरित करती रहेंगी और हम आशा करते हैं कि नारी-शक्ति को और मनोबल मिले, उत्साह मिले और वे आगे बढ़ती जाएँ। समाज में ऐसा मुकाम हासिल कर चुकी नारियों को फेम इंडिया का अभिवादन है।

सोच बदलें,समाज बदलेगा
राज श्री

राजश्री

शक्तिशाली नारी

नारायणी नमः

दिव्या खोसला कुमार

हर रोल में चमकदार

गीता गोपीनाथ

अर्थजगत की माहिर खिलाड़ी

भानुमती नरसिम्हन

मुस्कान से मोक्ष की यात्रा से दुनिया को परिचित करवा रही है

शक्तिशाली नारी

नारायणी नमः

निर्मला सीतारमण

अर्थतंत्र की अन्नपूर्णा

नीता अंबानी

सूझबूझ भरी सुंदरता

डॉ हेमलता एस मोहन

शिक्षा को सशक्त समाज की बुनियाद मानती

सीमा समृद्धि

मजलूमों की सशक्त आवाज

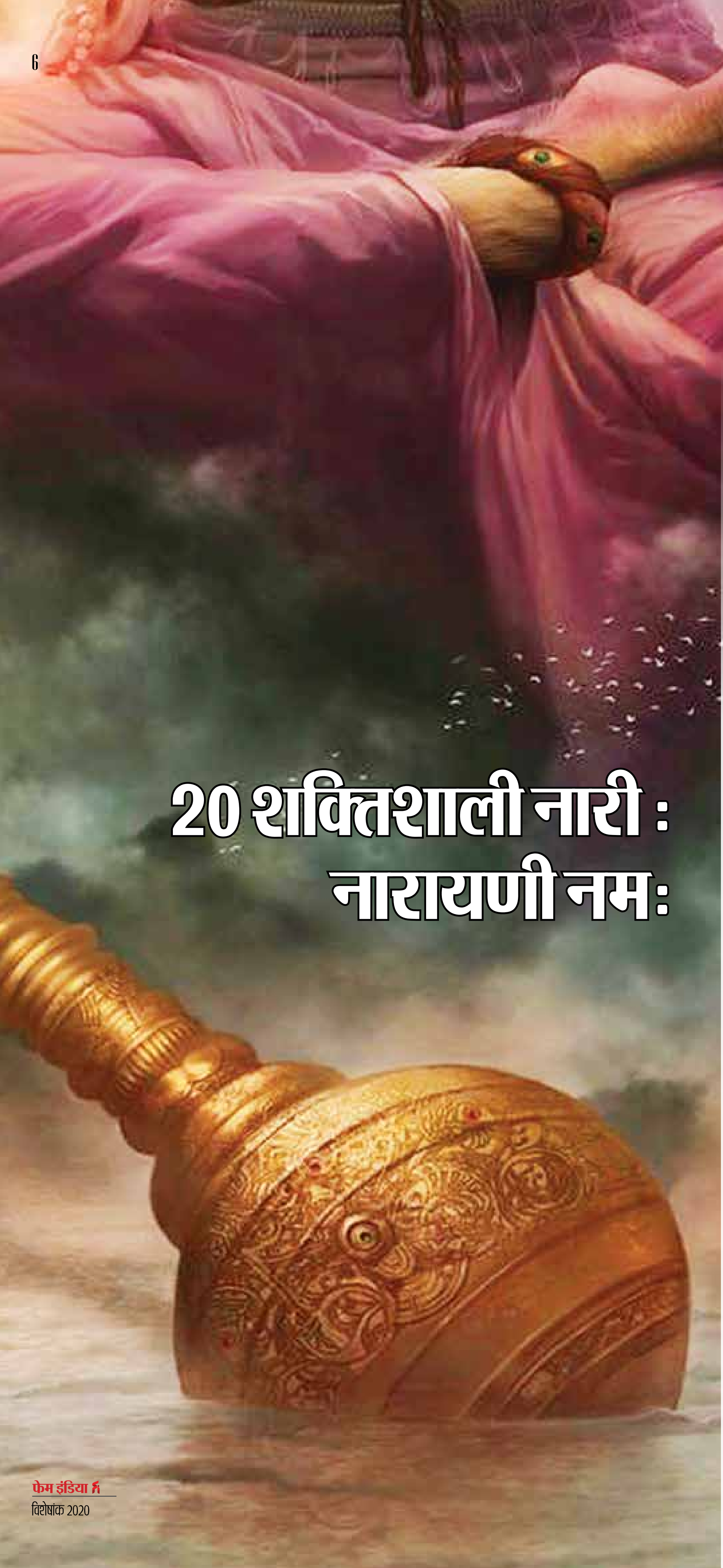

20 शक्तिशाली नारी : नारायणी नमः

भारतीय संस्कृति नारी को वैदिक काल से ही शक्ति का स्वरूप माना गया है और समाज में उसे उच्च स्थान प्राप्त है। शक्ति की उपासना का भारतीय धर्म शास्त्रों में बहुत बड़ा महत्व है। दुर्गा सप्तशती में 'त्वमेव संध्या सावित्री, त्वमेव जननी परा' इत्यादि अनेक श्लोकों के द्वारा शक्ति के शाश्वत स्वरूप का उल्लेख किया गया है। कहा गया है कि शक्ति ही संसार का संचालन कर रही है और इसके बिना शिव भी शव की तरह चेतना शून्य हैं।

नारी को जननी भी माना गया है जिसका काम सिर्फ संतान पैदा करना नहीं, बल्कि निर्माण करना भी है। नारी को त्याग की प्रतिमूर्ति माना गया है।

आज ये बात साबित हो चुकी है कि महिलाएं सारे कार्यों को बेहतर ढंग से कर सकती हैं। प्रबंधन यानी मैनेजमेंट के नजरिये से देखा जाये तो स्त्रियों में संगठनात्मक कार्य करने की क्षमता पुरुषों से ज्यादा होती है। सब का मत सुन कर वे फैसला लेती हैं, और खुद के ज्ञान को भी बाँटती हैं। छोटे से छोटे विषय पर भी महिलाएं निपुणता से विचार करती हैं। मुश्किल वक्त में वे शांत रहती हैं, इसलिए वे बेहतर सोच पाती हैं, खास कर कार्य के क्षेत्र में। महिलाओं को मल्टीटास्किंग में माहिर माना जाता है और वे एक साथ कई कार्यों को सरलता से अंजाम दे सकती हैं। इसीलिए आज महिलाएं सबसे बेहतर नेता और इंटरप्रेन्योर मानी जाती हैं।

फेम इंडिया व एशिया पोस्ट ने पच्चीस ऐसी महिलाओं के बारे में सर्वेक्षण किया है जो देश में विभिन्न क्षेत्रों में अपना प्रभाव रखती हैं। उन्होंने ये मुकाम अपनी मेहनत, लगन और अवसरों का समुचित उपयोग कर हासिल किया है। आज ये महिलाएं न सिर्फ खुद एक मुकाम पर हैं बल्कि समाज के विभिन्न वर्गों में मौजूद स्त्रियों के लिये प्रेरणा का स्त्रोत भी बनी हुई हैं।

20 शक्तिशाली नारी शक्ति 2020 के सर्वे "नारायणी नमः" में फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट सर्वे द्वारा समाजिक स्थिती, प्रभाव, प्रतिष्ठा, छवि, उद्देश्य, समाज के लिए प्रयास, देश के आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था पर प्रभाव जैसे दस मानदंडों पर किए गए स्टेकहोल्ड सर्वे में देश की प्रमुख 20 शक्तिशाली नारी में देश वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण प्रमुख स्थान पर है।

निर्मला सीतारमण

अर्थतंत्र की अन्नपूर्णा

“अपने-आप में एक मिसाल निर्मला सीतारमण भारत की पहली महिला हैं जो पूर्णकालिक रक्षा मंत्री रह चुकी हैं और वित्त मंत्री के तौर पर कार्य कर रही हैं। मोदी सरकार के दूसरे शासनकाल में निर्मला सीतारमण को 30 मई 2019 को वित्त मंत्रालय का कार्यभार सौंपा गया। इससे पहले सितंबर 2017 में उन्होंने रक्षा मंत्री बनकर भी इतिहास रचा था। वे भारत की वाणिज्य एवं उद्योग और वित्त व कॉर्पोरेट मामलों की राज्य मंत्री और भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय प्रवक्ता भी रह चुकी हैं।”

मदुरै के एक ब्राम्हण परिवार में 18 अगस्त 1959 को निर्मला सीतारमण का जन्म हुआ था। उनके पिता नारायण सीतारमण रेलवे में नौकरी करते थे और सावित्री देवी गृहणी हैं। उन्होंने तिरुचिरापल्ली के सीतालक्ष्मी कॉलेज से बीए की डिग्री हासिल की। इसके बाद जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय से इकोनॉमिक्स में एमए की डिग्री हासिल की और वहीं से एम फिल भी किया। वहीं उनकी मुलाकात पराकाला प्रभाकर से हुई जिनसे वर्ष 1986 में शादी करके निर्मला लंदन चली गयीं। वहां जाकर उन्होंने अपने करियर की शुरुआत प्राइसवाटरहाउस कूपर में सीनियर मैनेजर के तौर पर की थी। इसके बाद उन्हें बीबीसी वर्ल्ड सर्विस में भी काम करने का अवसर मिला। 1991 में दोनों वापस भारत लौट आये और एक बेटी के जन्म के बाद हैदराबाद में सेटल हो गये।

निर्मला सीतारमण हैदराबाद में सक्रिय तौर पर समाजसेवा के कार्यों में जुट गयीं। वे प्रणव स्कूल के संस्थापकों में से एक हैं और 'नैशनल कमीशन फॉर वीमेन' की सदस्य भी रहीं। वर्ष 2006 में उन्होंने भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ले ली। उन्हें पार्टी के छह प्रवक्ताओं के बीच जगह दी गयी। वे कई टीवी डिबेट में पार्टी का चेहरा बनीं और सुर्खियों में रहने लगीं। वर्ष 2014 में नव-निर्वाचित प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उन्हें वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय (स्वतंत्र प्रभार) और वित्त व कॉर्पोरेट मामलों का राज्य मंत्री बनाया। चूंकि वे सांसद नहीं थीं इसलिये उन्हें आंध्र प्रदेश से राज्यसभा में पहुंचीं। वर्ष 2016 में उन्हें पार्टी ने कर्नाटक से राज्यसभा चुनाव में उतारा जहां उन्हें जीत हासिल हुई। सितंबर 2017 में मोदी कैबिनेट री-शफल के बाद निर्मला सीतारमण रक्षामंत्री नियुक्त की गयी और दोबारा शासन में आने के बाद उन्हें वित्तमंत्री के तौर पर कैबिनेट में जगह मिली। वित्तीय क्षेत्र में अपने महत्वपूर्ण सुधारों के लिये उन्हें नयी पहचान मिली। फिलहाल वे देश के चोटी के राजनेताओं में शुमार हैं।

शक्तिशाली नारी

नारायणी नमः

20 शक्तिशाली नारी शक्ति 2020 के सर्वे " नारायणी नमः" में फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट सर्वे द्वारा समाजिक स्थिती, प्रभाव, प्रतिष्ठा, छवि, उद्देश्य, समाज के लिए प्रयास, देश के आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था पर प्रभाव जैसे दस मानदंडों पर किए गए स्टेकहोल्ड सर्वे में देश की प्रमुख 20 शक्तिशाली नारी में रिलायंस फाउंडेशन की चेयरपर्सन नीता अंबानी प्रमुख स्थान पर है ।

सूझबूझ भरी सुंदरता

भारत के सबसे अमीर व्यापारिक घराने की बहू और मशहूर बिजनेस वूमैन नीता अंबानी को भला कौन नहीं जानता। व्यापार हो या खेल, समाजसेवा हो या शिक्षा, हर क्षेत्र में उनका भरपूर योगदान है। प्रतिष्ठित रिलायंस इंडस्ट्रीज की डायरेक्टर के ओहदे से लेकर आईपीएल की मुंबई इंडियन्स क्रिकेट टीम की मालकिन तक, उनके नाम कई उपलब्धियां दर्ज हैं।

नीता अंबानी

नीता अंबानी रिलायंस फाउंडेशन की चेयरपर्सन, फाउंडर और धीरुभाई अंबानी इंटरनेशनल स्कूल की संस्थापक और चेयरपर्सन भी हैं। नीता अंबानी किसी स्टाइल आइकॉन से कम नहीं हैं।

उनका जन्म 1 नवंबर 1963 को मुंबई के एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था। उनके पिता रविंद्रभाई दलाल, बिड़ला ग्रुप में एक्जीक्युटिव थे। नीता ने मुंबई के नरसी मोन्जी कॉलेज ऑफ़कॉमर्स एंड इकोनॉमिक्स से कॉमर्स में बैचलर्स की डिग्री हासिल की। वे एक सुशिक्षित भरतनाट्यम डांसर भी हैं और हमेशा से क्लासिकल परफॉर्मर बनना चाहती थीं। नीता को धीरूभाई अंबानी और कोकिला बेन ने पहली बार एक सांस्कृतिक नृत्य कार्यक्रम में परफॉर्म करते देखा और प्रभावित होकर धीरूभाई ने उसी वक्त अपने बड़े बेटे मुकेश के लिए पसंद कर लिया।

शिक्षा के क्षेत्र से नीता अंबानी को ख़ासा लगाव है। पति मुकेश अंबानी के साथ मिलकर उन्होंने कई रूरल स्कूल भी चलाये और इसके बाद मुंबई में धीरुभाई अंबानी इंटरनेशनल स्कूल की नींव रखी।

नीता अंबानी एक आदर्श माँ, आदर्श पत्नी, कुशल उद्यमी, शिक्षाविद् एवं समाजसेवी हैं। नीता 50 प्रमुख उद्यमियों की सूची में टॉप पर रह चुकी हैं। उन्हें अंतरराष्ट्रीय खेलों की दुनिया में सबसे शक्तिशाली महिलाओं की लिस्ट में 9वें नंबर पर रखा जाता है। नीता अंबानी पहली भारतीय महिला हैं , जिन्हें इंटरनेशनल ओलिंपिक समिति का सदस्य चुना गया। नीता अंबानी को भारत के राष्ट्रपति से 'राष्ट्रीय खेल प्रोत्साहन पुरस्कार 2017' भी मिल चुका है।

20 शक्तिशाली नारी शक्ति 2020 के सर्वे " नारायणी नमः " में फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट सर्वे द्वारा समाजिक स्थिती, प्रभाव, प्रतिष्ठा, छवि, उद्देश्य, समाज के लिए प्रयास, देश के आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था पर प्रभाव जैसे दस मानदंडों पर किए गए स्टेकहोल्ड सर्वे में देश की प्रमुख 20 शक्तिशाली नारी में इंफोसिस फाउंडेशन की हेड सुधा कृष्णामूर्ति प्रमुख स्थान पर है ।

सादगी और समझदारी की अनुपम मिसाल

> सुधा मूर्ति एक ऐसी शख्सियत हैं जिन्होंने सदैव अपनी जिंदगी सादगी और समाज कल्याण के साथ जीने में यकीन रखा है। यही 'सादगी और मन की उदारता' उन्हें इस मुकाम पर ले आयी है जिसे देखने के लिये लोगों को आसमान तक नजरें ऊंची करनी पड़ती है। उद्योग जगत में सफलता की नयी कहानी लिखने वाली आईटी कंपनी इन्फोसिस के सोशल सर्विस विंग इन्फोसिस फाउंडेशन की अध्यक्ष सुधा मूर्ति की जिंदगी मेहनत और संघर्षों की अद्भुत कहानी है।

सुधा कृष्णमूर्ति

सुधा मूर्ति का जन्म 19 अगस्त 1950 में उत्तरी कर्नाटक में शिगांव में हुआ था। विवाह से पहले उनका नाम सुधा कुलकर्णी था। उन्होंने बीवीबी कालेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, हुबली से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में स्नातक किया। वर्ष 1974 में उन्होंने 'इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस' से कंप्यूटर साइंस में मास्टर्स डिग्री हासिल की। उन्हें स्वर्ण पदक भी मिला।

स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के बाद उन्होंने टाटा इंजीनीयरिंग एंड लोकोमोटिव कंपनी (टेल्को) में एक ग्रेजुएट ट्रेनी के रूप में करीयर की शुरुआत की।

सुधा कुलकर्णी की टेल्को में नौकरी दौरान नारायण मूर्ति से मुलाकात हुई जो पुणे में ही पट्नी कंप्यूटर्स में नौकरी कर रहे थे। दोनों ने जल्दी ही शादी कर ली। नारायण मूर्ति बेहद प्रतिभाशाली और योग्य इंजीनियर थे और अपना खुद का कारोबार करना चाहते थे, लेकिन उनके पास कोई पूंजी नहीं थी। कहते हैं, जब व्यवसाय शुरू करने के लिये पैसे कम पड़े तो सुधा मूर्ति ने अपने गहने भी गिरवी रख दिये। नारायण मूर्ति ने उस छोटी सी प्रारंभिक राशि से 'इंफोसिस' की शुरूआत की।

सुधा मूर्ति एक कुशल इंजीनियर होने के साथ-साथ एक सामाजिक कार्यकर्ता, एक प्रतिभावान शिक्षिका और एक अत्यंत संवेदनशील लेखिका भी हैं। कम्प्यूटर साइंस के क्षेत्र में उन्हें महिलाओं के लिए बेहद प्रतिष्ठित कालेज

महारानी लक्ष्मी अम्मन्नी कालेज की स्थापना करने का श्रेय जाता है। वे कंप्यूटर साइंस पढ़ाने के साथ-साथ साहित्य लेखन भी करती हैं।

मराठी, कन्नड़, हिंदी और अंग्रेजी भाषाओं पर समान पकड़ रखने वाली सुधा मूर्ति की दर्जन भर से अधिक आलेख व पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं । "आप जो भी काम करें, अच्छी तरह से करें" के मूल उद्देश्य का पालन करने वाली सुधा मूर्ति को वर्ष 2006 में पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

शक्तिशाली नारी

नारायणी नमः

20 शक्तिशाली नारी शक्ति 2020 के सर्वे " नारायणी नमः" में फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट सर्वे द्वारा समाजिक स्थिती, प्रभाव, प्रतिष्ठा, छवि, उद्देश्य, समाज के लिए प्रयास, देश के आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था पर प्रभाव जैसे दस मानदंडों पर किए गए स्टेकहोल्ड सर्वे में देश की प्रमुख 20 शक्तिशाली नारी में पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी प्रमुख स्थान पर है ।

फायरब्रांड नेता से ममतामयी दीदी तक

> **ममता बनर्जी ऐसी पहली महिला हैं जो पश्चिमी बंगाल के मुख्यमंत्री पद पर आसीन हुई हैं। फिलहाल वे प्रदेश की नौवीं मुख्यमंत्री हैं। बंगाल में वह लोकप्रिय रूप से "दीदी" के रूप में जाना जाती हैं, उन्होंने पश्चिम बंगाल के वर्ष 2011 के विधानसभा चुनावों में व्यापक जीत के साथ राज्य में इतिहास बनाया। इससे पहले वे भारत की पहली महिला रेलमंत्री बनकर भी इतिहास बना चुकी हैं।**

ममता बनर्जी

ममता बनर्जी का जन्म 5 जनवरी 1955 को कोलकाता में एक बेहद साधारण बंगाली परिवार में हुआ था। उनके पिता प्रोमिलेश्वर बनर्जी थे और उनकी माँ गायत्री देवी थीं। उन्होंने नौ वर्ष की उम्र में अपने पिता को खो दिया, लेकिन मां ने उनकी पढ़ाई जारी रखी। उन्होंने कोलकाता में जोगमाया देवी कॉलेज से इतिहास में स्नातक और कलकत्ता विश्वविद्यालय से इस्लामी इतिहास में मास्टर्स डिग्री प्राप्त की। उन्होंने कोलकाता के जोगेश चन्द्र चौधरी लॉ कॉलेज से कानून की डिग्री भी हासिल की है। उन्होंने देश की सेवा में समर्पित होकर आजीवन अविवाहित रहने का प्रण किया है। वे बेहद रचनात्मक हैं ।

ममता बनर्जी का राजनीति में प्रवेश बहुत ही कम उम्र में हुआ था, जब वे स्कूल में ही थीं। वे राज्य की कांग्रेस (आई) पार्टी में शामिल हो गयीं और उन्होंने पार्टी एवं अन्य राजनीतिक समूहों में अलग-अलग पदों पर सेवा प्रदान की। 1997 में उन्होंने भारतीय नेशनल कांग्रेस से अलग हो कर तृणमूल कांग्रेस पार्टी का गठन किया । वे वर्ष 1984 से 2009 तक लोकसभा की सांसद रही है, और केंद्र में कई सरकारों में केंद्रीय मंत्री पद की जिम्मेदारी भी निभा चुकी है । 20 मई 2011 को वे पश्चिम बंगाल की पहली महिला मुख्यमंत्री बनीं। 19 मई 2016 को वे लगातार दूसरी बार पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री बनीं।

ममता बनर्जी एक राजनीतिज्ञ होने के साथ-साथ एक उम्दा कलाकार, कवियत्री और लेखिका भी हैं। उन्होंने यूएन के आम चुनावों में भारत का प्रतिनिधित्व भी किया है। लंबे समय से चली आ रही गोरखालैंड समस्या को हल करने की पहल करने का श्रेय ममता बनर्जी को दिया जाता है। वर्ष 2012 में उनका उल्लेख दुनिया के 100 सबसे प्रभावशाली लोगों के रूप में किया जा चुका है ।

20 शक्तिशाली नारी शक्ति 2020 के सर्वे " नारायणी नमः " में फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट सर्वे द्वारा समाजिक स्थिती, प्रभाव, प्रतिष्ठा, छवि, उद्देश्य, समाज के लिए प्रयास, देश के आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था पर प्रभाव जैसे दस मानदंडों पर किए गए स्टेकहोल्ड सर्वे में देश की प्रमुख 20 शक्तिशाली नारी में कली पूरी प्रमुख स्थान पर है ।

न्यु मीडिया की बेताज मलिका

> आज के दौर में जहां एक तरफ न्यूज एंड करेंट अफेयर्स के अधिकांश कंटेंट प्लेयर्स दर्शकों के नंबर बटोरने की होड़ में जुटे हैं, आजतक ने डिजिटल की पहुंच के मामले में सबको पीछे छोड़ दिया है। इसके साथ ही यह यूट्यूब पर 20 मिलियन से अधिक सबस्क्राइबर्स की संख्या वाला पहला न्यूज चैनल बन गया है। इस लोकप्रियता का श्रेय जाता है 'इंडिया टुडे' समूह की वाइस चेयरपर्सन कली पुरी को जिन्होंने इसकी सारी योजना बनायी और उसे अंजाम तक पहुंचाया।

कली पूरी

इंडिया टुडे के संस्थापक अरुण पुरी की छोटी पुत्री कली का जन्म वर्ष 1970 में दिल्ली में हुआ। उनकी शुरुआती शिक्षा दिल्ली के मॉडर्न पब्लिक स्कूल में हुई। उच्च शिक्षा के लिये उन्होंने विदेश का रुख किया जहां उन्होंने इंग्लैंड की प्रतिष्ठित ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी से राजनीति, दर्शनशास्त्र और अर्थशास्त्र में स्नातक की डिग्री हासिल की।

कली ने वर्ष 1996 में बतौर मार्केटिंग एक्जीक्यूटिव अपना करीयर शुरू किया फिर अपने ग्रुप की फ्लैगशिप मैगजीन इंडिया टुडे में बतौर रिपोर्टर काम शुरू किया। बाद में उन्हें इंडिया टुडे ग्रुप की डिजिटल विंग का चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर यानी सीओओ बना दिया गया। उनके पास मीडिया में काम करने का शानदार अनुभव है। उन्होंने आजतक, इंडिया टुडे टेलीविजन, आज तक एचडी, तेज, दिल्ली आज तक, डिजिटल पेपर और एप के लिये विभिन्न स्तरों पर काम किया है।

आज कली पुरी का नाम मीडिया जगत में हर किसी को पता है। उन्होंने डिजिटल मीडिया पर अपना ध्यान केंद्रित किया। यह उनकी फ्यूचर स्ट्रैटेजी का ही परिणाम है कि यूट्यूब पर दमदार प्रदर्शन के अलावा 'आजतक' सभी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे-फेसबुक, इंस्टाग्राम और ट्विटर पर भी अव्वल बन गया। यही नहीं, डेस्कटॉप के साथ ही इंटरनेट और ऐप्स पर भी यह देश का सबसे बड़ा न्यूज ब्रैंड बना हुआ है। उनके नेतृत्व में आजतक ने यूट्यूब पर 10 मिलियन से बढ़कर 20 मिलियन सबस्क्राइबर्स का आंकड़ा पार करने में सिर्फ 11 महीनों का समय लिया है।

हाल ही में कली पुरी को 'इंडियाज मोस्ट पॉवरफुल वुमैन इन मीडिया' अवॉर्ड से सम्मानित किया गया है। उन्हें यह अवॉर्ड 27 सितंबर, 2019 को ब्रिटिश संसद में आयोजित प्रतिष्ठित कॉनफ्लुएंस एक्सीलेंस अवॉर्ड्स समारोह के दौरान दिया गया।

इससे पहले कली को लंदन में 21वीं सेंचुरी आइकन अवॉर्ड्स में 'आउटस्टैंडिंग मीडिया एंड एंटरटेनमेंट अवॉर्ड' से भी सम्मानित किया गया है। वर्ष 2017 में उन्हें इंपैक्ट मैगजीन अवाईर्स के छठे संस्करण में 5 वीं सबसे शक्तिशाली महिला के रूप में नामित किया गया था।

20 शक्तिशाली नारी शक्ति 2020 के सर्वे " नारायणी नमः" में फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट सर्वे द्वारा समाजिक स्थिती, प्रभाव, प्रतिष्ठा, छवि, उद्देश्य, समाज के लिए प्रयास, देश के आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था पर प्रभाव जैसे दस मानदंडों पर किए गए स्टेकहोल्ड सर्वे में देश की प्रमुख 20 शक्तिशाली नारी में प्रमुख समाजसेवी सिंधुताई सपकाल प्रमुख स्थान पर है।

सैकड़ों बच्चों की ममतामयी मां

"केबीसी के 'कर्मवीर स्पेशल एपिसोड' में एक अनोखा दृश्य दिखा। जब गेस्ट पार्टिसिपेंट ने स्टेज पर कदम रखा तो सुपरस्टार होस्ट ने उनका स्वागत उनके पैर छूकर किया। ये मेहमान समाजसेवी सिंधुताई सपकाल थीं। महाराष्ट्र की मदर टेरेसा के नाम से मशहूर इन समाजसेवी महिला ने अपनी गरीबी और परेशानियों के बावजूद सैकड़ों अनाथ बच्चों को सहारा दिया।"

सिंधुताई सपकाल

सिंधुताई के जीवन की कहानी बेहद दर्दनाक है। उनका जन्म 14 नवंबर 1948 को महाराष्ट्र के वर्धा जिले में पिपरी मेघे गांव में हुआ था। उनके पिता अभिमान साठे एक चरवाहा थे और उनकी परिवरिश एक अनचाही संतान के तौर पर हुई। हालांकि उनके पिता ने उन्हें स्कूल भेजा और प्राथमिक शिक्षा दिलवायी, परन्तु महज दस वर्ष की उम्र में उनका विवाह एक तीस वर्ष के व्यक्ति के साथ कर दिया गया। शादी के कुछ वर्षों बाद उन्होंने गाँव के मुखिया की शिकायत जिलाधिकारी से कर दी , अपमान का बदला लेने के लिए उस मुखिया ने सिन्धु के पति पर दबाव डाल कर उन्हें घर से निकलवा दिया , उस समय वे गर्भवती थीं। उन्होंने एक गौशाला में शरण ली जहां उन्होंने एक बेटी को जन्म दिया। सिन्धुताई अपनी बेटी के साथ रेलवे स्टेशन पर रहने लगीं। वे दिन भर भीख माँगती और रात को सुरक्षित रहने के लिये शमशान में रहती थीं। बाद में उन्होंने अपनी बेटी को पुणे के 'श्री दगडुशेठ हलवाई ट्रस्ट को गोद दे दिया। बेटी को छोड़ने के बाद उन्हें रेलवे स्टेशन पर जब एक निराश्रित बच्चा मिला तो उनके मस्तिष्क में विचार कौंधा कि ऐसे हजारों बच्चे और भी हैं, उनका क्या होगा? इसके बाद शुरू हुआ यह अंतहीन सिलसिला जो आज महाराष्ट्र की पांच बड़ी संस्थाओं में तब्दील हो चुका है। इन संस्थाओं में हजारों बेसहारा बच्चे , विधवा व परित्यक्ताओं को आसरा मिला हुआ है। उनके अनाथाश्रम पुणे, वर्धा, सासवड (महाराष्ट्र) में स्थित हैं।

सिन्धुताई को कुल 270 से भी अधिक राष्ट्रीय और आंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुके है जिनमें महाराष्ट्र राज्य सरकार द्वारा दिया जाने वाला बहुप्रतिष्ठित 'अहिल्याबाई होल्कर पुरस्कार' भी शामिल है।

20 शक्तिशाली नारी शक्ति 2020 के सर्वे "नारायणी नमः" में फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट सर्वे द्वारा समाजिक स्थिती प्रभाव, प्रतिष्ठा, छवि, उद्देश्य, समाज के लिए प्रयास, देश के आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था पर प्रभाव जैसे दस मानदंडों पर किए गए स्टेकहोल्ड सर्वे में देश की प्रमुख 20 शक्तिशाली नारी में वंदना शिवा प्रमुख स्थान पर है।

आधुनिक समाज की जीनीयस

"भारत ही नहीं,पूरी दुनिया में अपनी मुहिम के लिये प्रख्यात वंदना शिवा को जहां टाइम मैगज़ीन ने 'इन्वायरन्मेंटल हीरो' की उपाधि दी है वहीं फ़ोर्ब्स ने उन्हें विश्व की सात सबसे शक्तिशाली महिलाओं की सूची में रखा है।"

वंदना शिवा

वंदना शिवा का जन्म देहरादून की घाटी में 5 नवंबर 1952 को हुआ। उनकी शिक्षा नैनीताल में सेंट मैरीज़ स्कूल और जीसस एंड मैरी कन्वेंट, देहरादून में हुई। वे एक प्रशिक्षित जिम्नास्ट रह चुकी हैं और भौतिकी विज्ञान में स्नातक की अपनी उपाधि प्राप्त करने के बाद, उन्होंने गुएल्फ विश्वविद्यालय (ओंटारियो, कनाडा) से "चेंजेज इन द कॉन्सेप्ट ऑफ पिरियोडिसिटी ऑफ लाइट" शीर्षक नामक शोध-प्रबंध के साथ विज्ञान के दर्शन में स्नातकोत्तर कला की अपाधि प्राप्त की। 1979 में, उन्होंने पश्चिमी ओंटारियो विश्वविद्यालय से पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। बाद में वे बैंगलोर स्थित आआईएस एवं आईआईएम से भी जुड़ीं।

वर्ष 1970 के दशक में वे उत्तराखंड के बहुचर्चित चिपको आंदोलन से बतौर स्वयंसेवक जुड़ीं। वर्ष 1982 में उन्होंने अनुसंधान फाउंडेशन और वर्ष 1987 में 'नवधान्य' नामक संस्था की स्थापना की। यह संस्था स्थानीय किसानों और विलुप्त हो रही फसलों व पौधों के संवर्धन की दिशा में कार्यरत है। बायोपाइरेसी, स्टोलेन हार्वेस्ट, मोनोकल्चर्स ऑफ़ माइंड जैसे अपने शैक्षणिक पेपर्स और किताबों के माध्यम से उन्होंने कई बहुराष्ट्रीय कंपनियों को कड़ी टक्कर दी जो नीम, बासमती और गेहूं आदि फसलों की बायो-पाइरेसी यानी जैविक चोरी करने की कोशिश में थीं।

वंदना शिवा ने कृषि और खाद्य पदार्थों की मौलिकता और उत्पादन के तरीकों में परिवर्तन लाने की साजिश के विरुद्ध संघर्ष किया है। उन्होंने जेनेटिक इंजीनियरिंग के विरुद्ध अभियानों के माध्यम से अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका, आयरलैंड, स्विट्ज़रलैंड एवं ऑस्ट्रिया में हरित आंदोलन के मूलभूत संगठनों को मदद की है। उन्हें विश्व के कई संगठनों और संस्थाओं से कई राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुके हैं। वंदना शिवा को वैश्वीकरण के संबंध में अंतर्राष्ट्रीय फोरम की नेताओं में माना जाता है। वे अल्टर ग्लोबलाइज़ेशन मूवमेंट की उन प्रणेताओं में से एक हैं।

FAME INDIA

शक्तिशाली नारी

नारायणी नमः

20

शक्तिशाली नारी शक्ति 2020 के सर्वे " नारायणी नमः" में फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट सर्वे द्वारा सामाजिक स्थिती, प्रभाव, प्रतिष्ठा, छवि, उद्देश्य, समाज के लिए प्रयास, देश के आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था पर प्रभाव जैसे दस मानदंडों पर किए गए स्टेकहोल्ड सर्वे में देश की प्रमुख 20 शक्तिशाली नारी में गीता गोपीनाथ प्रमुख स्थान पर है।

अर्थजगत की माहिर खिलाड़ी

"गीता गोपीनाथ अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष यानी आईएमएफ के मुख्य अर्थशास्त्री का महत्त्वपूर्ण दायित्व को संभालने वाली पहली महिला हैं। उन्हें ऐसे समय में इस वित्तीय संगठन के मुख्य आर्थिक सलाहकार की जिम्मेदारी दी गयी है जब आर्थिक वैश्वीकरण की बहुपक्षीय संस्थाओं के सामने कई चुनौतियां खड़ी हो रही हैं।"

गीता गोपीनाथ

गीता का जन्म 8 दिसंबर 1971 को कोलकाता में हुआ था। उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा मैसूर के निर्मला कॉन्वेंट स्कूल में की। उन्होंने वर्ष 1992 में दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित लेडी श्रीराम कॉलेज फॉर वूमेन से अर्थशास्त्र में स्नातक और वर्ष 1994 में दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से मास्टर्स डिग्री प्राप्त की। साथ ही उन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ वाशिंगटन से मास्टर्स डिग्री भी प्राप्त की। वे हॉर्वर्ड यूनिवर्सिटी में अंतरराष्ट्रीय अध्ययन और अर्थशास्त्र की प्रोफेसर रही हैं। उन्होंने 2001 में प्रिंसटन यूनिवर्सिटी से अंतर्राष्ट्रीय व्यापक अर्थशास्त्र और व्यापार में पीएचडी की है।

गीता गोपीनाथ नैशनल ब्यूरो ऑफ इकोनॉमिक रिसर्च में इंटरनेशनल फाइनेंस एंड मैक्रो-इकॉनॉमिक्स प्रोग्राम की सह-निदेशक हैं। वे भारत सरकार के वित्त मंत्रालय के जी-20 सलाहकार समिति में प्रतिष्ठित सदस्य के रूप में भी शामिल रही हैं।

गीता गोपीनाथ के पति इकबाल सिंह धालीवाल 1995 बैच के आईएएस टॉपर रहे हैं। बाद में उन्होंने नौकरी छोड़ दी और पढ़ाई के लिए प्रिंसटन यूनिवर्सिटी चले गये। वर्तमान में वे मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के अर्थशास्त्र विभाग के सेंटर अब्दुल लतीफ जमील पॉवर्टी एक्शन लैब के ग्लोबल एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर हैं, जिसे नोबल पुरस्कार प्राप्त प्रसिद्ध अर्थशास्त्री अभिजीत बनर्जी और एस्थर डुफ्लो ने स्थापित किया था। गीता गोपीनाथ को वर्ष 2019 में शैक्षणिक वर्ग में राष्ट्रपति से प्रवासी भारतीय सम्मान मिल चुका है।

20 शक्तिशाली नारी शक्ति 2020 के सर्वे "नारायणी नमः" में फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट सर्वे द्वारा समाजिक स्थिती, प्रभाव, प्रतिष्ठा, छवि, उद्देश्य, समाज के लिए प्रयास, देश के आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था पर प्रभाव जैसे दस मानदंडों पर किए गए स्टेकहोल्ड सर्वे में देश की प्रमुख 20 शक्तिशाली नारी में जैन आचार्य चंदना जी प्रमुख स्थान पर है।

मुस्कान से मोक्ष दिलातीं आचार्य

> **जैन धर्म को आधुनिक विश्व के अनुरूप एक नया आयाम देने वाली चंदना जी महाराज जैन धर्म के लगभग 2600 वर्षों के इतिहास में बनने वाली चंद महिला आचार्य में एक हैं। उन्होंने बदलते वैश्विक परिदृश्य में अपने मिशन 'वीरायतन' को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक अलग ही पहचान बनायी है।**

आचार्य चंदना जी

चंदना जी का जन्म 26 जनवरी 1937 को महाराष्ट्र के चस्कमन गांव में कटारिया परिवार में हुआ था। उनकी माँ प्रेम कुंवर और पिता माणिकचंद ने उनका नाम शकुंतला रखा था। उन्होंने चस्कमन में कक्षा 3 तक की औपचारिक शिक्षा ली। उनके नाना ने उन्हें जैन साध्वी सुमति कुंवर के पास दीक्षा लेने के लिए राजी कर लिया ताकि वे दूसरों की मदद करने के साथ-साथ अध्ययन भी कर सकें।

चौदह वर्ष की आयु में सांसारिक मोह-माया त्याग कर जैन साध्वी बनी चंदना जी ने जैन शास्त्रों, जीवन के अर्थ और उद्देश्य व विभिन्न धर्मों का अध्ययन करने के लिये बारह वर्ष का कठोर मौन व्रत रखा। उन्होंने भारतीय विद्या भवन, मुंबई से दर्शनशास्त्र की उपाधि प्राप्त की, पराग से साहित्य रत्न, पथार्डी धर्म परीक्षा बोर्ड से स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से नव्य-न्याय और व्याकरण में शास्त्री की उपाधि प्राप्त की। प्रमुख जैन संत अमरमुनि जी शिष्या रहीं चंदना जी को सन् 2013 में आचार्य की पदवी दी गयी।

वर्ष 1974 में चंदना जी महाराज ने बिहार के राजगीर में वीरायतन नामक संस्था की शुरुआत की। उन्होंने जैन धर्म में आ रही रूढ़ियों पर न सिर्फ सवाल खड़े किये बल्कि कई बार उन्हें तोड़ा भी। उनका मानना है मुनि, आचार्य और साध्वी का कार्य सिर्फ प्रवचन देना नहीं सेवा भी होना चाहिए।

वीरायतन पूरे भारतीय उप महाद्वीप में गरीबों के लिये निःशुल्क अस्पताल, स्कूल, कॉलेज और व्यावसायिक प्रशिक्षण जैसे कार्यक्रम संचालित करता है। वीरायतन ने गुजरात में 2001 के भूकंप, 2004 में आयी सुनामी, 2006 में सूरत की बाढ़, 2008 में कोसी नदी की बाढ़ और 2015 में नेपाल में आये विनाशकारी भूकंप के फौरन बाद आपातकालीन राहत शिविरों और पुनर्वास कार्यक्रमों की जो शुरुआत की उसकी चर्चा आज भी होती है।

चंदना जी ने तीर्थंकर के संदेशों को स्थापित व प्रचारित करने के उद्देश्य से तीर्थ नगरी पलिताना में दिव्य विश्व नामक एक विश्वविद्यालय की स्थापना की है।

शक्तिशाली नारी

नारायणी नमः

20

शक्तिशाली नारी शक्ति 2020 के सर्वे " नारायणी नमः" में फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट सर्वे द्वारा समाजिक स्थिती, प्रभाव, प्रतिष्ठा, छवि, उद्देश्य, समाज के लिए प्रयास, देश के आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था पर प्रभाव जैसे दस मानदंडों पर किए गए स्टेकहोल्ड सर्वे में देश की प्रमुख 20 शक्तिशाली नारी में वीएलसीसी की चेयरपर्सन वंदना लूथरा प्रमुख स्थान पर है ।

फिटनेस की हर दिलअजीज क्वीन

> **आज अगर देश में फिटनेस और वेलनेस सेंटरों की बात की जाये तो वीएलसीसी यानि वंदना लूथरा कर्ल्स एंड कर्व्स को चोटी के केंद्रों में से माना जा सकता है। 25 साल के काम-काज में वीएलसीसी लगातार तरक्की करते हुए एशिया की सबसे बड़ी वेलनेस कम्पनियों में शुमार हो गयी है।**

वंदना लूथरा

12 जुलाई 1959 को दिल्ली में जन्मी वंदना लूथरा ने फिटनेस के व्यवसाय में कदम रखने से पहले इस क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्राप्त करके बारीकियों को समझा। उन्होंने ग्रेजुएशन के बाद जर्मनी में न्यूट्रीशन एवं कॉस्मेटोलॉजी में उच्च शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद लंदन, म्युनिख और पेरिस में ब्यूटी केयर, फिटनेस, फूड एण्ड न्यूट्रीशन और स्किन केयर में कई स्पेशलाइज्ड कोर्स और मॉड्यूल किये। जब उन्होंने बिजनेस शुरू किया तो शुरुआती चुनौती आयी अपनी पहचान बनाने और लोगों का भरोसा जीतने की।

ट्रांसफॉर्मेशन सेंटर का आइडिया उनके लिए बिल्कुल नया था सो उन्होंने खूब मन लगा कर काम किया। मेहनत रंग लायी और दिल्ली सफदरजंग इलाके में खोला गया उनका पहला सैलून लोगों को भा गया। लेकिन उन्हें अपने उद्यम के लिए पैसा जुटाने में भी काफी मुश्किलें आयीं। 25 साल के काम-काज में वीएलसीसी लगातार तरक्की करते हुए न केवल एशिया की सबसे बड़ी वेलनेस कम्पनियों में शुमार हो गयी है बल्कि इसने भारत में वेलनेस सेक्टर के विस्तार में भी सराहनीय योगदान दिया है।

वंदना लूथरा के निरंतर प्रयासों से कंपनी के सेंटर 16 देशों के 121 शहरों में 300 से अधिक स्थानों पर मौजूद है। भारत, श्रीलंका, नेपाल, बांग्लादेश, मलेशिया, सिंगापुर, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), ओमान, बहरीन, कतर, कुवैत, सऊदी अरब और कीनिया में खुद कम्पनी अपना काम-काज करती है। साथ ही भारत और सिंगापुर स्थित इसके प्लांट में वीएलसीसी की बड़ी रेंज के स्किन केयर, हेयर केयर और बॉडी-केयर प्रोडक्ट का उत्पादन भी होता है। कम्पनी में पूरी दुनिया के 39 देशों के 6,000 से अधिक लोग काम करते हैं। वर्ष 2013 में उन्हें औद्योगिक क्षेत्र में अपने महत्वपूर्ण योगदान के लिए 'पद्म श्री' से भी नवाज़ा गया है।

शक्तिशाली नारी
नारायणी नमः

20 शक्तिशाली नारी शक्ति 2020 के सर्वे "नारायणी नमः" में फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट सर्वे द्वारा समाजिक स्थिती, प्रभाव, प्रतिष्ठा, छवि, उद्देश्य, समाज के लिए प्रयास, देश के आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था पर प्रभाव जैसे दस मानदंडों पर किए गए स्टेकहोल्ड सर्वे में देश की प्रमुख 20 शक्तिशाली नारी में ब्रह्मकुमारी शिवानी प्रमुख स्थान पर है।

अध्यात्मिक शांति की आधुनिक परिभाषा

"बीके (यानी ब्रह्मा कुमारी) शिवानी के नाम से मशहूर इन अध्यात्मिक शिक्षिका के दुनिया भर में करोड़ों फॉलोवर्स हैं। वे लोक-कल्याण के लिये अपना सारा जीवन समर्पित कर चुकी हैं और अपने प्रवचनों के द्वारा लोगों को अध्यात्म से जुड़कर अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिये प्रेरित करती रहती हैं।"

ब्रह्मकुमारी शिवानी

19 मार्च, 1972 को पुणे शहर में एक मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मी शिवानी बचपन से ही मेधावी छात्रा रही हैं। उन्होंने इंटरमीडियेट के बाद इंजीनियरिंग में दाखिले की परीक्षा अच्छे नंबरों से पास की और वर्ष 1994 में पुणे विश्वविद्यालय से इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग में स्नातक की डिग्री हासिल की। वे इंजीनियरिंग में गोल्ड मेडलिस्ट रही हैं और उन्होंने भारतीय विद्यापीठ कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, पुणे में बतौर प्राध्यापक दो साल तक छात्रों को शिक्षा भी दी।

महज 23 साल की उम्र में उन्होंने दो हफ्ते में एक बार ब्रह्मा कुमारीज के प्रवचनों में जाना शुरू कर दिया। यहीं से उनका ब्रह्मा कुमारीज की तरफ झुकाव शुरू हुआ और उन्होंने संस्था में अपने तकनीकी ज्ञान का योगदान देना शुरू किया।

वर्ष 2007 में एक नये शो की शुरुआत हुई 'अवेकनिंग विद ब्रह्मकुमारीज़', ये शो अभिनेता सुरेश ओबरॉय द्वारा होस्ट किया गया। ये कार्यक्रम सिस्टर शिवानी की सरल शैली और मधुर आवाज के कारण बेहद लोकप्रिय रहा। बातचीत की इस टीवी सीरीज को वर्ष 2015 में 'हैप्पीनेस अनलिमिटेड:अवेकनिंग विद ब्रह्माकुमारीज़' नाम की किताब में संकलित भी किया गया जो बेस्टसेलर साबित हुई। वर्ष 2014 में, आध्यात्मिक चेतना सशक्त बनाने में उत्कृष्टता के लिये उन्हें ऑल लेडीज़ लीग द्वारा 'दी डियाडे एचीवर्स अवॉर्ड' की महिलाओं के साथ सम्मानित किया गया। वे पब्लिक सेमिनार और टेलीविजन कार्यक्रमों के जरिये मोटिवेश्नल कोर्सेज चलाती हैं।

ब्रह्मा कुमारी शिवानी भारत और विदेश में अंगदान से लेकर पैरेंटिंग तक पर आयोजित चैरिटेबल इवेंट्स में हिस्सा लेती रही हैं। वे प्रज्ञापिता ब्रह्मा कुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय से वर्ष 1995 से अध्यात्म शिक्षिका के रूप में जुड़ी हुई हैं और वर्ल्ड साइकियैट्रिक एसोसिएशन की गुडविल ऐम्बेसेडर भी हैं। वर्ष 2014 में, उन्हें एसोचैम लेडीज़ लीग द्वारा आध्यात्मिक चेतना को सशक्त बनाने में उत्कृष्टता के लिये 'द वुमन ऑफ़डिकेड अचीवर्स अवार्ड' से सम्मानित किया गया। शिवानी जी लोगों को जीवन जीने की कला सिखाती हैं।

शक्तिशाली नारी

नारायणी नमः

20

शक्तिशाली नारी शक्ति 2020 के सर्वे " नारायणी नमः" में फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट सर्वे द्वारा समाजिक स्थिती, प्रभाव, प्रतिष्ठा, छवि, उद्देश्य, समाज के लिए प्रयास, देश के आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था पर प्रभाव जैसे दस मानदंडों पर किए गए स्टेकहोल्ड सर्वे में देश की प्रमुख 20 शक्तिशाली नारी में संगीता रेड्डी प्रमुख स्थान पर है।

बिजनेस और घर दोनों में टॉप पर

"देश की सफल इंटरप्रेन्योर में शामिल डॉ संगीता रेड्डी वर्तमान में अपोलो हॉस्पिटल्स एंटरप्राइजेज की ज्वाइंट मैनेजिंग डायरेक्टर और फेडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज (फिक्की) की प्रेसिडेंट हैं। दिसंबर 2019 में उन्होंने फिक्की के चेयरपर्सन की जिम्मेदारी संभाली है। देश के हेल्थकेयर सेक्टर में नई नई टेक्नोलॉजी का बेहतरीन उपयोग कर उन्होंने एक नया आयाम स्थापित किया है।"

संगीता रेड्डी

फ्यूचरिस्टिक हेल्थ केयर प्रोग्राम में डॉ. संगीता रेड्डी बेंचमार्क सेट करने का प्रयास कर रहीं है। जिससे आईओटी, एआई, डेटा एनालिटिक्स, ड्रोन टेक और ब्लॉक चेन जैसी टेक्नोलॉजी का उपयोग देश के हेल्थ केयर सेक्टर में सरलता से संभव हो जाएगा। उनकी कुशल नेतृत्व का ही नतीजा है कि अपोलो हॉस्पिटल्स ने लगातार तीन बार प्रतिष्ठित एचआईएमएसएस- ईलसेवियर आइसीटी अवार्ड प्राप्त किए हैं और चार अपोलो अस्पतालों को एचआईएमएसएस लेवल -6 सर्टिफिकेट दिया गया है। इन्होने अपने नेतृत्व में अपोलो हॉस्पिटल, हैदराबाद को एशिया का पहला हेल्थ सिटी बना दिया है।

डॉ संगीता रेड्डी पूर्व में फिक्की हेल्थ केयर कमेटी, नई दिल्ली की चेयरपर्सन और सदस्य रहीं है। उन्होंने 2010 से 2016 तक फेडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (फिक्की) की कई इनिशिएटिव्स को सफलतापूर्वक अंजाम दिया। वे विभिन्न नेशनल और इंटरनेशनल आर्गनाइजेशन की बोर्ड मेम्बर हैं। डॉ. संगीता रेड्डी वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की मेम्बर हैं और वे नैस्कॉम, डेवलपमेंट आर्गनाइजेशन - संयुक्त राज्य अमेरिका और जीएवीआई डॉट ओराजी आदि आर्गनाइजेशन की बोर्ड मेम्बर भी रही है। भारत सरकार भी अपने कई हेल्थ सर्विस से जुड़ी संस्थाओं में इनके अनुभव का लाभ समय समय पर लेती रहती है। डॉ संगीता रेड्डी को योजना आयोग, भारत सरकार द्वारा 12वीं पंचवर्षीय योजना (2012-2017) के लिए हेल्थ आर्गनाइजिंग कमिटी का मेम्बर भी बनाया गया था।

डॉ. संगीता रेड्डी अपोलो नॉलेज की चेयरमैन है। अपोलो नॉलेज भविष्य की स्वास्थ्य सेवा की बेहतरी के लिए कार्य करने वाली संस्था है, जिसके द्वारा "पहल" जैसे मेडिकल कॉलेज की स्थापना की जा रही है। अपोलो नालेज के अंतर्गत मेडिकल की ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म डेवलप की जा रही है। डॉ संगीता रेड्डी के नेतृत्व में अपोलो मेडस्किल्स भारत में सबसे बड़ा और सबसे पसंदीदा हेल्थकेयर स्किलिंग संस्थान बन गया है।

20 शक्तिशाली नारी शक्ति 2020 के सर्वे " नारायणी नमः" में फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट सर्वे द्वारा समाजिक स्थिती, प्रभाव, प्रतिष्ठा, छवि, उद्देश्य, समाज के लिए प्रयास, देश के आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था पर प्रभाव जैसे दस मानदंडों पर किए गए स्टेकहोल्ड सर्वे में देश की प्रमुख 20 शक्तिशाली नारी में किरण चोपड़ा प्रमुख स्थान पर है ।

किरण चोपड़ा

बुजुर्गों की जिंदगी में रोशनी बन चमकती किरण

पंजाब केसरी समाचारपत्र समूह की अध्यक्ष किरण चोपड़ा एक उत्कृष्ट समाजसेवी भी हैं। इंटरप्रेन्योर, शिक्षाविद और मानवतावादी होने के साथ-साथ वे एक प्रेरक वक्ता और समाज सुधारक भी हैं। उन्होंने वरिष्ठ नागरिक केसरी क्लब की स्थापना की है। किरण चोपड़ा ज़रूरतमंदों की मदद के लिये हमेशा तत्पर रहती हैं। महान शहीद स्व. लाला जगत नारायण जी और स्व. रोमेश चंदर जी के परिवार से ताल्लुक रखने वाली किरण चोपड़ा कई सामाजिक गतिविधियों से जुड़ी हुई हैं।

वरिष्ठ पत्रकार व सांसद रहे स्वर्गीय अश्विनी कुमार इनके पति थे। उनकी असमय मृत्यु के बाद किरण चोपड़ा ने जिस प्रकार पूरे पंजाब केसरी परिवार को जिस तरह हिम्मत और स्नेह से संभाला है वह काबिल-ए-तारीफ है। 'वरिष्ठ नागरिक केसरी क्लब' जिसकी प्रेरणा और ताकत किरण ही हैं। वे इस संस्था के माध्यम से उन बुजुर्गों के उत्थान और उनको बेहतर खुशहाल जिन्दगी देने के लिये जुटी हुई हैं जिन्हें अक्सर उनके घरवाले उपेक्षित रखते हैं।

पंजाब के गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी से पॉलिटिकल साइंस में एमए किरण चोपड़ा ऐक्टिंग और भाषण देने की कला में गोल्ड मेडलिस्ट रही हैं। वे पंजाब केसरी पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड की डायरेक्टर और जेआर मीडिया इंस्टीट्यूट की चेयरपर्सन हैं। उन्हें भारत सरकार ने सामाजिक न्याय और सशक्तिकरण मंत्रालय द्वारा वृद्ध व्यक्तियों के लिये गठित राष्ट्रीय परिषद का सदस्य भी बनाया है। साथ ही कई सामाजिक कल्याण और विकास के लिये बनायी गयी समितियों और संस्थाओं की सदस्य व संरक्षक हैं।

किरण चोपड़ा ने अपने जीवन के अनुभवों और विचारों को किताबों में भी संकलित किया है। 'आशीर्वाद' इंग्लिश वर्जन 'ब्लेसिंग्स', 'जीवन संध्या', 'ज़िन्दगी का सफ़र', 'आज और कल' व 'अनुभव' के अलावा इन्होंने 'बेटियाँ' नाम से एक कॉफ़ी टेबल बुक भी लिखी है। इसका विमोचन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने किया था और हरियाणा के तत्कालीन राज्यपाल कप्तान सिंह सोलंकी ने इसे आम लोगों के लिये रिलीज किया था। एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में, किरण चोपड़ा को सामाजिक न्याय और सशक्तिकरण मंत्रालय द्वारा महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी के हाथों 'वयोश्रेष्ठ सम्मान 2017' से सम्मानित किया गया है। राजीव गाँधी अवार्ड, सोशल एक्टिविस्ट ऑफ़ द ईयर 2012, ह्यूमन केयर चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड, इंडियन बुक्स ऑफ़रिकार्ड्स द्वारा इंटरनेशनल अवार्ड फॉर सोशल क्रिएटिविटी, इंडियन काउंसिल फॉर यूएन रिलेशन्स द्वारा इंटरनेशनल वीमेंस अवार्ड 2013 समेत कई नेशनल और इंटरनेशनल अवार्ड इनके नाम दर्ज हैं।

शक्तिशाली नारी

नारायणी नमः

20 **शक्तिशाली नारी शक्ति 2020 के सर्वे " नारायणी नमः" में फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट सर्वे द्वारा समाजिक स्थिती, प्रभाव, प्रतिष्ठा, छवि, उद्देश्य, समाज के लिए प्रयास, देश के आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था पर प्रभाव जैसे दस मानदंडों पर किए गए स्टेकहोल्ड सर्वे में देश की प्रमुख 20 शक्तिशाली नारी में सरोज पांडेय प्रमुख स्थान पर है ।**

स्वच्छ राजनीति की नयी परिभाषा

> **वैसे तो आधुनिक राजनीति को संभावनाओं का खेल कहा जाता है, लेकिन कुछ राजनेता अभी भी पारंपरिक तौर पर इसे लोक सेवा और जनसंपर्क का माध्यम मानते हैं और सफलता उन्हीं के कदम चूमती है। ऐसी ही जनसाधारण से जुड़ी और रिकॉर्ड बनाने वाली पॉलिटिशियन के नाम से मशहूर सरोज पांडेय फिलहाल राज्यसभा सांसद हैं।**

सरोज पांडेय

सरोज पांडे का जन्म 22 जून 1968 को छत्तीसगढ़ के दुर्ग में हुआ था। राजनीति में जाने का उनका कोई इरादा नहीं था। वे कॉलेज टॉपर और गोल्ड मेडलिस्ट थीं। कॉलेज में प्रोफेसरशिप भी मिली लेकिन ज्वाइन नहीं किया। रेडियो में अनाउंसर बनीं, दूरदर्शन में न्यूज रीडर के तौर भी चयन हुआ। उनकी स्वच्छ व मेधावी छवि के कारण भाजपा की ओर से उन्हें मेयर का टिकट दे दिया गया। जीत हासिल हुई और उन्होंने इतना शानदार प्रदर्शन किया कि पूरे इलाके की जनता उनके कार्यों की कायल हो गयी।

सरोज पांडेय ने जब दूसरी बार मेयर पद का चुनाव लड़ा तो रिकॉर्ड वोटों से जीतीं। उन्होंने भाजपा से अपने शहर भिलाई के लिये विधायक का टिकट मांगा, लेकिन पार्टी ने सर्वे में सबसे पिछड़ रही वैशाली सीट पर इन्हें आजमाया। सरोज पांडेय ने वहां भी जोरदार जीत दर्ज की। इसी दौरान दुर्ग के तत्कालीन सासंद को पार्टी ने निकाल दिया और एक चुनौती के तौर पर सरोज पांडेय को मैदान में उतारा गया। वे दुर्ग से 15 वीं लोकसभा के लिए चुनी गयीं। उस समय वे विधायक तो थीं ही, तकनीकी तौर पर मेयर भी थीं और सासंद भी बन चुकी थीं। इस तरह से देश की त्रि-स्तरीय पंचायत व्यवस्था में एक साथ तीनों सदनों की सदस्य रहने वाली सरोज पांडेय के नाम पर एक अनोखा रिकॉर्ड बना।

उन्हें सर्वश्रेष्ठ मेयर का पुरस्कार भी मिला चुका है। वर्ष 2013 में भाजपा ने उन्हें महिला मोर्चा का राष्ट्रीय अध्यक्ष नियुक्त किया। मार्च 2018 से वे छत्तीसगढ़ से राज्यसभा सांसद हैं और वर्तमान में भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय महासचिव भी हैं।

20 **शक्तिशाली नारी शक्ति 2020 के सर्वे "नारायणी नमः" में फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट सर्वे द्वारा समाजिक स्थिती, प्रभाव, प्रतिष्ठा, छवि, उद्देश्य, समाज के लिए प्रयास, देश के आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था पर प्रभाव जैसे दस मानदंडों पर किए गए स्टेकहोल्ड सर्वे में देश की प्रमुख 20 शक्तिशाली नारी में डॉ इंदिरा हिंदुजा प्रमुख स्थान पर है ।**

डॉ इंदिरा हिंदुजा

डॉ. इंदिरा हिंदुजा ने 'गैमेट इंट्राफैलोपियन ट्रांसफर' यानी गिफ्ट तकनीक विकसित करने वाले दल का नेतृत्व किया, जिसके परिणामस्वरूप 4 जनवरी 1988 को भारत के पहले 'गिफ्ट' बच्चे का जन्म हुआ। इससे पहले उन्होंने 6 अगस्त 1986 को केईएम अस्पताल में भारत के पहले टेस्ट ट्यूब बेबी का जन्म करा कर इतिहास रच दिया था।

डॉ. इंदिरा हिंदुजा का परिवार मूल रूप से पाकिस्तान के शिकारपुर का रहने वाला था। उनका जन्म स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले हुआ था और विभाजन के बाद वह परिवार के साथ भारत आ गयी थीं। उन्होंने अपनी शिक्षा-दीक्षा मुंबई में ही की। बॉम्बे यूनिवर्सिटी से स्त्री रोग विज्ञान में एमडी की डिग्री हासिल करने के बाद उन्होंने अपना पूरा जीवन लोगों की सेवा में लगा दिया। उन्होंने बॉम्बे युनिवर्सिटी से ह्युमन इन वर्टियो फर्टिलाइजेशन व एंब्रियो ट्रांसफर में पीएचडी की डिग्री हासिल की।

15 जुलाई, 1991 को उन्हें मुंबई के सार्वाधिक प्रतिष्ठित माने जाने वाले जसलोक अस्पताल में ऑनरेरी ऑब्सटेट्रीशियन एंड गायनेकोलॉजिस्ट बनाया गया और वे अब तक वहां से जुड़ी हैं। कुछ ही वर्षों में बेहद सम्मानित ब्रीच कैंडी अस्पताल और हिंदुजा अस्पताल में भी उन्हें मानद प्रसूति व स्त्रीरोग विशेषज्ञ का ओहदा मिल गया। वर्ष 2011 में उन्हें भारत सरकार द्वार दिये जाने वाले तीसरे सबसे बड़े पद्म अवॉर्ड पद्मश्री से सम्मानित किया गया है। इसके अलावा उन्हें वर्ष 2000 में धनवंतरी अवॉर्ड, इंटरनैशनल वूमेन्स डे अवॉर्ड , वर्ष 1999 में लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड, वर्ष 1987 में आउटस्टैंडिंग लेडी ऑफ महाराष्ट्र स्टेट जेसी अवॉर्ड और यंग इंडियन अवॉर्ड भी मिल चुके हैं।

मातृत्व की देवी

"कहते हैं संतान का सुख एक ऐसा उपहार है जो सिर्फ ईश्वर ही दे सकता है, लेकिन कई बार वो अपना जरिया बनाकर ऐसे दूतों को धरती पर भेज देता है जो इंसान को मुश्किलों से निकाल कर उन्हें नयी आशा दिखाते हैं। अपने मरीजों की नजर में डॉ. इंदिरा हिंदुजा एक ऐसी ही देवदूत हैं ।"

शक्तिशाली नारी

नारायणी नमः

20

शक्तिशाली नारी शक्ति 2020 के सर्वे " नारायणी नमः" में फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट सर्वे द्वारा समाजिक स्थिती, प्रभाव, प्रतिष्ठा, छवि, उद्देश्य, समाज के लिए प्रयास, देश के आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था पर प्रभाव जैसे दस मानदंडों पर किए गए स्टेकहोल्ड सर्वे में देश की प्रमुख 20 शक्तिशाली नारी में रौशनी नाडर मल्होत्रा प्रमुख स्थान पर है।

बिजनेस और सोशल वेलफेयर दोनों में अव्वल

> "वैसे तो विरासत के धनी कई लोग होते हैं, लेकिन अपनी काबिलियत और मेहनत के दम पर इसे संभाल कर आगे बढ़ाने वाले विरले ही होते हैं। ऐसी ही शख्सियत की मालकिन हैं एचसीएल ग्रुप के मालिक शिव नाडर की इकलौती बेटी रौशनी नाडर मल्होत्रा। वे 28 साल की उम्र में ही एचसीएल की सीईओ बन गयीं और कंपनी को लगातार नयी उंचाइयों पर पहुंचा रही हैं। उन्हें हाल ही में एक सर्वे में देश की सबसे धनी महिला का स्थान दिया गया है।"

रौशनी नाडर मल्होत्रा

रौशनी नाडर का जन्म वर्ष 1982 में दिल्ली में हुआ। उनकी स्कूली शिक्षा वसंत वैली स्कूल से हुई। इसके बाद उन्होंने नॉर्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी से मीडिया में ग्रेजुएशन किया। इसी दौरान उन्होंने सीएनबीसी चैनल में बतौर इन्टर्न काम किया और ग्रेजुएशन के बाद स्काई न्यूज के लंदन ऑफिस में नौकरी भी की, लेकिन पिता के कहने पर उन्होंने ये जॉब छोड़ दी। इसके बाद इन्होंने केल्लौग ग्रेजुएट स्कूल ऑफ मैनेजमेंट से सोशल इंटरप्राइज मैनेजमेंट एंड स्ट्रेटजी से एमबीए किया। अक्टूबर 2008 में रौशनी स्वदेश लौट आयीं और अपने पिता की कंपनी एचसीएल कॉर्पोरेशन से जुड़ गयीं। अप्रैल 2009 में सिर्फ 27 साल की उम्र में रौशनी नाडर एचसीएल कॉर्पोरेशन की सीईओ और एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर बन गयीं। रौशनी नाडर लगातार चार वर्षों से प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका फोर्ब्स में दुनिया की 100 ताकतवर महिलाओं की सूची में शामिल हो रही हैं। उनकी कामयाबी के इस पैमाने का लोहा दुनिया मानती है।

रौशनी नाडर को एनडीटीवी बेस्ट फिलैन्थ्रॉपिस्ट ऑफ द ईयर 2014 और वॉग इंडिया फिलैन्थ्रॉपिस्ट ऑफ द ईयर 2017 के अवॉर्ड से भी नवाज़ा जा चुका है। वे विद्या-ज्ञान की चेयरमैन और प्रेरणा शक्ति भी। विद्याज्ञान एक ऐसी लीडरशिप अकादमी है जो गॉंव के मेधावी, साधनों से वंचित बच्चों को शिक्षा प्रदान कराती है। रौशनी विश्व आर्थिक मंच के एक युवा ग्लोबल लीडर भी हैं। रौशनी नाडर को वर्ष 2015 में वर्ल्ड समिट ऑन इनोवेशन एंड इंटरप्रेन्योरशिप (WSIE) द्वारा 'द वर्ल्ड्स मोस्ट इनोवेटिव पीपल' अवॉर्ड से भी सम्मानित किया गया. साल 2016 में भारत की लीडिंग बिजनेस मैगजीन बिज़नेस टुडे ने रौशनी को मोस्ट पॉवरफुल वीमेन इन इंडिया में फीचर किया था। वर्ष 2018 में हुए फेम इंडिया-एशिया पोस्ट सर्वे में वे भारत की 25 सशक्त महिलाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। 2017 में उन्हें बैबसन कॉलेज द्वारा लेविस इंस्टिट्यूट 2017 कम्युनिटी चेंजमेकर अवॉर्ड से भी सम्मानित किया गया. रौशनी ने शिखर मल्होत्रा से शादी की है और दो बेटों की माँ हैं।

20 शक्तिशाली नारी शक्ति 2020 के सर्वे " नारायणी नमः" में फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट सर्वे द्वारा समाजिक स्थिती, प्रभाव, प्रतिष्ठा, छवि, उद्देश्य, समाज के लिए प्रयास, देश के आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था पर प्रभाव जैसे दस मानदंडों पर किए गए स्टेकहोल्ड सर्वे में देश की प्रमुख 20 शक्तिशाली नारी में सुनिता नारायण प्रमुख स्थान पर है।

सुनिता नारायण

शुद्धता और शुचिता से समझौता नहीं

> पर्यावरण प्रेमी स्कूली छात्रा ग्रेटा थनबर्ग को आज विश्व भर में मिल रही प्रसिद्धि के बीच भारत की उस बेटी का जिक्र आवश्यक है जिसने आज से पांच दशक पहले ही बतौर स्कूली छात्रा पर्यावरण को बचाने की मुहिम छेड़ दी थी। पद्मश्री सुनीता नारायण नामक इस प्रकृतिप्रेमी को हाल के वर्षों में अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका टाइम ने दुनिया की 100 प्रभावशाली लोगों की सूची में शामिल किया है।

सुनीता नारायण का जन्म वर्ष 1961 में दिल्ली के एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। जब वे महज आठ साल की थीं तब उनके पिता की मृत्यु हो गयी थी। उनकी मां ने मुश्किलों से उनकी तीन बहनों को पाल-पोस कर बड़ा किया। बचपन से ही उन्हें पर्यावरण सुरक्षित रखने का जुनून था। वर्ष 1979 में जब वे स्कूल में पढ़ रही थीं, तभी बाहरी कंपनियों को दिल्ली के रिज फॉरेस्ट में जंगलों को काटने से रोकने के लिये अभियान चलाने वाले दिल्ली के एक सक्रिय छात्र समूह 'कल्पवृक्ष' में शामिल हो गयीं।

वर्ष 1982 में सुनीता नारायण प्रख्यात पर्यावरणविद अनिल अग्रवाल द्वारा शुरू की गयी संस्था 'सेंटर फॉर साइंस एंड इनवॉर्नमेंट' से जुड़ गयीं और वहां कई महत्त्वपूर्ण शोध किये। वर्ष 2001 में उन्हें इस संस्थान का निदेशक बनाया गया। वर्ष 2003 में उन्होंने मिनरल वॉटर और वर्ष 2004 में उन्होंने कोका-कोला और पेप्सी में मौजूद अशुद्धियों का राज खोल कर तहलका मचा दिया। इसके बाद उन्होंने बाजार में उपलब्ध कई उत्पादों की अशुद्धियां खोजीं।

उन के बेहतरीन कार्यों का प्रतिफल मिला वर्ष 2005 में जब उन्हें भारत सरकार ने पदमश्री से सम्मानित किया। इसी वर्ष उन्हें स्टाकहोम वॉटर प्राइज भी मिला। इसके पहले भी उन्हें कई पुरस्कार व सम्मान मिल चुके हैं। उन की जागरूकता अभियान का दायरा प्रतिवर्ष बढ़ता ही रहा है। वे पर्यावरण से जुड़े मुद्दों के अलावा नक्सलवाद, राजनीतिक भ्रष्टाचार, बाघ व पेड़ संरक्षण और अन्य सामाजिक विषयों पर कार्य कर रही हैं।

सादे विचार और व्यवहार वाली सुनीता नारायण का व्यक्तित्व युवा पीढ़ी खास कर महिलाओं के लिये खास प्रेरणास्त्रोत है।

शक्तिशाली नारी

नारायणी नमः

20 शक्तिशाली नारी शक्ति 2020 के सर्वे " नारायणी नमः" में फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट सर्वे द्वारा समाजिक स्थिती, प्रभाव, प्रतिष्ठा, छवि, उद्देश्य, समाज के लिए प्रयास, देश के आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था पर प्रभाव जैसे दस मानदंडों पर किए गए स्टेकहोल्ड सर्वे में देश की प्रमुख 20 शक्तिशाली नारी में मालनी अवस्थी प्रमुख स्थान पर है ।

कला के जरिये समाजसेवा के शिखर पर

> लोक गीतों से देश-विदेश में प्रसिद्धि पाने वाली मालिनी अवस्थी आज किसी परिचय की मोहताज नहीं हैं। भोजपुरी, अवधी, बुंदेलखंडी और कई क्षेत्रीय भाषाओं में उनके गाये गीतों ने भारत ही नहीं, दुनिया भर में उनकी ख्याति फैला दी है। भारत सरकार ने उन्हें प्रतिष्ठित पद्मश्री की उपाधि से भी सम्मानित किया है। मालिनी अवस्थी का जन्म 11 फरवरी 1967 को कन्नौज जिले में एक डॉक्टर परिवार में हुआ था। उनके पिता सरकारी डॉक्टर थे।

मालिनी अवस्थी

कन्नौज में जन्म के बाद उनका पूरा परिवार गोरखपुर चला गया। यहीं पर उन्होंने इंटरमीडियट तक की पढ़ाई पूरी की। इस दौरान उनके पिता का कई जगह ट्रांसफर होता रहा। इसी बीच मालिनी ने अपने गुरु उस्ताद राहत अली साहब से संगीत सीखा। उनकी मां की ख्वाहिश थी कि बेटी क्लासिकल संगीत सीखे और इसे जन-जन तक पहुंचाये। इसके लिए उन्होंने पद्मविभूषण गिरिजा देवी से ठुमरी सीखी। वे धीरे-धीरे संगीत में परिपक्व होने लगीं। उन्होंने भटकखंड विश्वविद्यालय, लखनऊ से हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल की। उन्होंने अश्लील और फूहड़ होती लोक गायिकी को संस्कार में बदलकर बुलंदियों तक पहुंचाया।

1988 में उनकी शादी अवनीश अवस्थी नामक यूपी कैडर के आईएएस अधिकारी से हो गयी। एक हाईप्रोफाइल समाज उनके सामने था। लेकिन उनके पति ने उच्च पदों पर होने के बावजूद उनके भोजपुरी बोलने पर रोक नहीं लगायी। मालिनी अवस्थी लोकप्रिय शास्त्रीय संगीत समारोह, जहां-ए-खुसरो में एक नियमित कलाकार हैं। वे ठुमरी, थारे रहो बाँके श्याम के प्रस्तुति के लिए लोकप्रिय है. वे अखिल भारतीय रेडियो की एक लोकप्रिय ए ग्रेड कलाकार भी हैं। उन्होंने अमेरिका, इंग्लैंड, फिजी, मॉरीशस और हॉलैंड देश की यात्रा भी की है।

इन्होंने टीवी चैनल एनडीटीवी इमेजिन के एक शो जूनून में भी हिस्सा लिया था। यूपी चुनाव 2012 के लिए चुनाव आयोग द्वारा उन्हें ब्रांड एंबेसडर नियुक्त किया गया था। उन्होंने कुंभ मेला 2013 में भी अपनी लोक-गायकी का प्रदर्शन किया।उन्होंने कई फिल्मों और एलबमों के लिये भी गीत गाये हैं। वर्ष 2016 में पद्मश्री से सम्मानित होने से पहले वर्ष 2014 में कालिदास सम्मान, वर्ष 2003 में सहारा अवध सम्मान, वर्ष 2006 में यूपी सरकार द्वारा यश भारती और वर्ष 2006 में नारी गौरव सम्मान से सम्मानित हो चुकी हैं।

20 शक्तिशाली नारी शक्ति 2020 के सर्वे "नारायणी नमः" में फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट सर्वे द्वारा समाजिक स्थिती, प्रभाव, प्रतिष्ठा, छवि, उद्देश्य, समाज के लिए प्रयास, देश के आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था पर प्रभाव जैसे दस मानदंडों पर किए गए स्टेकहोल्ड सर्वे में देश की प्रमुख 20 शक्तिशाली नारी में दिव्या खोसला कुमार प्रमुख स्थान पर है।

दिव्या खोसला कुमार

दिव्या खोसला का जन्म 27 नवंबर 1981 को दिल्ली के एक पंजाबी परिवार में हुआ था। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से जानकी देवी कॉलेज से बीकॉम की पढ़ाई की। वे पढ़ाई में काफी तेज थीं, लेकिन उनका मन अभिनय में लगता था। अभिनय में अपना करियर बनाने के लिए दिव्या दिल्ली से मुंबई शिफ्ट हो गयीं। उन्होंने वर्ष 2003 में मशहूर सिंगर फाल्गुनी पाठक के गाने "आय्यो रामा हाय मेरा दिल खो गया..." में यादगार रोल के बाद अभिजीत के "कभी यादों में आऊं" में आयीं। इसके कुछ ही महीनों बाद जब वे कुणाल गांजावाला के गाने "हनी हनी, जिद ना करो" में फिल्म स्टार सलमान खान के साथ आयी तो इंडस्ट्री में तहलका मच गया।

दिव्या खोसला ने वर्ष 2004 में फिल्म 'अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों' से अपने फिल्मी करियर की शुरुआत की। ये फिल्म मल्टी स्टारर थी और दिव्या अक्षय कुमार के ऑपोजिट थीं। इसी फिल्म के निर्माण के दौरान उनकी मुलाकात टी सीरीज के मालिक गुलशन कुमार के बेटे भूषण कुमार से हुई और उनके परिवारिक संबंध बन गये। कुछ ही दिनों में दिव्या खोसला की शादी भूषण कुमार से हुई और इसके बाद उनका करीयर एक तरह से ठहर सा गया।

वर्ष 2014 में दिव्या खोसला कुमार ने बतौर निर्देशक अपनी जोरदार वापसी की फिल्म 'यारियां' के साथ। इसके बाद बतौर निर्देशक 'सनम रे' उनकी अगली सुपर हिट फिल्म रही। उन्होंने टी सीरीज के निदेशक के तौर पर कई फिल्मों को प्रोड्यूस भी किया। वर्ष 2019 में जब वे नेहा कक्कड़ के गाने "याद पिया की आने लगी" में लीड रोल में उतरी तो मानों एक बार फिर तहलका मचा दिया। महज तीन महीने में इस गाने को 21 करोड़ लोग देख चुके हैं।

हर रोल में चमकदार

"दिव्या खोसला कुमार एक ऐसी शख्सियत हैं जिन्हें फिल्मों में अभिनय, निर्देशन और निर्माण तीनों क्षेत्रों में समान रूप से जाना जाता है। उन्हें हर विधा में इतना परफेक्ट माना जाता है कि बड़े-बड़े दिग्गज तक उनका लोहा मानते हैं। उनकी प्रतिभा एक ऐसी ज्वालामुखी के समान है जो तब अचानक धधक कर चमक उठती है जब लोग उसे शांत हो चुका मान लेते हैं।"

शक्तिशाली नारी

नारायणी नमः

20

शक्तिशाली नारी शक्ति 2020 के सर्वे " नारायणी नमः" में फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट सर्वे द्वारा सामाजिक स्थिती, प्रभाव, प्रतिष्ठा, छवि, उद्देश्य, समाज के लिए प्रयास, देश के आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था पर प्रभाव जैसे दस मानदंडों पर किए गए स्टेकहोल्ड सर्वे में देश की प्रमुख 20 शक्तिशाली नारी में अमला रुइया प्रमुख स्थान पर है।

सूखे में हरियाली लाती पानी वाली अम्मा

> **अमला रुइया एक ऐसी महिला है जिन्होंने वॉटर हार्वेस्टिंग सिस्टम से चेक डैम बनाकर राजस्थान के सैकड़ों गांवों की तस्वीर बदल दी। इस बदलाव से गांव वालों की लाइफ नये ट्रैक पर आ गयी है। आज सभी गांवों की कुल सालाना आय करीब 300 करोड़ रुपए से ज्यादा है। अमला रुइया का जन्म वर्ष 1946 में एक संभ्रांत परिवार में हुआ था। उनके पुरखे डालमिया थे, जिन्होंने बिहार में डालमिया नगर का निर्माण किया था। उनकी शादी मुंबई के एक धनी परिवार में हुई। उनके पति अशोक रुइया एक मशहूर व्यापारी थे जिनकी पिछले वर्ष जनवरी में मृत्यु हो गयी।**

अमला रूईया

1999-2000 में अमला रुइया टीवी पर राजस्थान के गांवों में पड़े अकाल की भयावह तस्वीरें देख कर वहां पहुंच गयी। प्रयोग के तौर पर अपने चैरिटेबल ट्रस्ट आकार फाउंडेशन की मदद से मंदवार गांव में पहला चेक डैम बनवाया। पानी मिलने से गांव के किसान एक साल में तीन-तीन फसलें उगाने लगे। घरों में पशुपालन का काम-धंधा भी शुरू कर दिया। उन्होंने उसी गांव में एक और चेक डैम बनाया। किसानों की आय एक साल में करीब 12 करोड़ रुपए तक पहुंच गयी। उत्साहित होकर उन्होंने प्रदेश के दूसरे गांवों में भी चेक डैम बनवाये। वे अब तक 100 गांवों में 200 डैम बनवा चुकी हैं। अमला रुइया को गांवों के लोग 'पानी माता' के नाम से भी बुलाने लगे हैं। उनकी टीम ने अन्य राज्यों जैसे मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा, और छत्तीसगढ़ में दंतेवाड़ा जिले में चेक डैम बनाना शुरू कर दिया है और बिहार, हरियाणा, उत्तरांचल और उत्तर प्रदेश में विस्तार करने की योजना बनायी है। अमला रुइया की योजना अपने जीवनकाल में कम से कम 3000 चेकडैम बनाने की है।

अमला रुइया के ट्रस्ट ने पानी के साथ शिक्षा को भी गंभीरता से लिया है। उन्होंने राजस्थान के रामगढ़ में प्री-प्राइमरी से लेकर हायर सेकंडरी तक ऐसे मॉडल स्कूल स्थापित किये हैं। उन्होने करीब 800 टीचिंग ऐड्स भी विकसित किये हैं। उन्होंने मुंबई में एक हर्बल गार्डन को एक खूबसूरत जगह में बदल दिया है, जहां स्कूली बच्चों को प्रकृति को करीब से जानने का मौका मिलता है। वर्ष 2011 में, रुइया को सामुदायिक सेवा और सामाजिक उत्थान की श्रेणी में लक्ष्मीपत सिंघानिया, आईआईएम लखनऊ राष्ट्रीय नेतृत्व पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वर्ष 2016 में, उन्हें वीमेन ऑफ वर्थ सोशल अवार्ड श्रेणी के लिए नामांकित किया गया था। 2018 में, उन्होंने इंडिया आई इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स ऑब्जर्वर अचीवमेंट अवार्ड भी 2018 प्राप्त किया है।

बदलनी है धरा तो निर्माण की नींव बदलें -

फेम इंडिया , सोच बदलें समाज बदलेगा ।

फेम इंडिया मैगजीन की शुरुआत नौ वर्षों पूर्व एक सकारात्मक सोच और प्रयास के साथ हुई। स्वच्छ एवं सभ्य समाज का निर्माण सकारात्मक कार्यों की चर्चा और उनके क्रियान्वयन से ही हो सकता है। इसी कड़ी में हमारा प्रयास है कि मीडिया सिर्फ नकारात्मक सोच या चर्चा को बढ़ावा देने की बजाय उन सकारात्मक पहलुओं की भी चर्चा करे जो विकास को गति प्रदान करते हैं और जीवन को ऊर्जा से भर देते हैं। हमारा इरादा उन पक्षों को सामने लाने का है जिनसे लोग बदले, कार्य संस्कृति बदली और जिनसे देश और समाज में फैली निराशा विकास में तब्दील हुई। हम उनकी चर्चा करते हैं ,जहां जिंदगी अपनी सम्पूर्ण खुशियों के साथ धड़क रही है और जहां नये भारत की तस्वीर गढ़ी जा रही है। हमारा मानना है कि सकारात्मक मूल्यों और बदली कार्य संस्कृति से ही युवा क्रियात्मकता को गति मिलती है । इसीलिए फेम इंडिया ने नौ वर्ष पहले सकारात्मकता का मार्ग अपनाया और इसे एक देश भर में सफल मुहिम बनाई ।

फेम इंडिया मैगजीन का प्रयास अपने हर अंक में हर महीने देश और समाज के विकास के लिए सच्चे मन से प्रयास कर रहे ढेर सारे लोगों में कुछ चुनिंदा लोगों को सामने लाने का रहती है जो अन्य के लिए प्रेरणास्त्रोत बन सकें ।

फेम इंडिया हर साल युवाओं , समाज सेवियों , सशक्त नारीयों, शिक्षाविदों , सांसदों , केंद्रीय व राज्यों के मंत्रियों, ब्यूरोक्रेट्स , आईपीएस सहित समाज के विभिन्न क्षेत्रों से सर्वे द्वारा प्रमुख कुछ नाम का चुनाव करवाती है , इसके लिए हम समय समय पर प्रतिष्ठित सर्वे एजेंसी का सहयोग और विभिन्न क्षेत्रों के जानकार लोगों की राय लेते हैं ।इस कड़ी को आगे बढ़ाते हुए हमने वर्ष 2018 में फेम इंडिया श्रेष्ठ सांसद अवार्ड की शुरुआत की ।

क्योंकि भारतीय लोकतंत्र में संसद की सबसे अहम भूमिका है। आम जनता ये जानना व बताना भी चाहती है कि उनके प्रतिनिधि कितना योगदान दे रहे है। इसी कड़ी में हमने देश के ऐसे ही सांसदों को प्रोत्साहित करने के लिये प्रसिद्ध सर्वे एजेंसी एशिया पोस्ट के साथ मिल कर ऐसे कर्मयोद्धा लोकसभा सदस्यों को सामने लाने की कोशिश की, जो अपने कार्यों के प्रति

समर्पित रहे। इस सर्वे में वर्ष 2018, वर्ष 2019 एवं वर्ष 2020 में 25 -25 ऐसे सांसदों को चुना गया, जिन्होंने संसदीय परंपरा का निर्वहन करते हुए अपने क्षेत्र के कल्याण और क्षेत्रवासियों के साथ संपर्क में सामंजस्य बनाये रखा। फेम इंडिया श्रेष्ठ सासंद अवार्ड वर्ष 2018 एवं फेम इंडिया श्रेष्ठ सासंद अवार्ड वर्ष 2019 से सम्मानित सांसदों में वर्तमान लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला जी , अरविंद सावंत जी , केंद्रीय मंत्री डॉ महेन्द्र नाथ पांडेय जी , केंद्रीय मंत्री प्रह्लाद सिंह पटेल जी , डॉ किरिट भाई सोलंकी जी , दुष्यंत चौटाला जी , सुप्रिया सुले जी , संजय जायसवाल जी , एन के प्रेमचंद्रन , कलिकेश सिंह देव जैसे अन्य कई प्रमुख नाम शामिल रहे ।

श्रेष्टता को सम्मान की इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए हमने वर्ष 2019 से फेम इंडिया सर्वश्रेष्ठ मंत्री अवार्ड की शुरुआत की है । फेम इंडिया ने इसमें राज्य सरकारों के मंत्रियों के कार्य की रेटिंग करवाई , राज्यों की सरकारें सीधे तौर पर आम नागरिकों से जुड़ी होती हैं इसलिये इनका सक्षम और सक्रिय होना नितांत आवश्यक माना जाता है।

इसी क्रम में उन मंत्रियों का आकलन भी जरूरी था, जो अपने-अपने राज्यों में प्रशासन की बागडोर सुचारू रूप से चला रहे हैं। यह अपनी तरह का पहला सर्वे है जिसमें देश भर के मंत्रियों को शामिल कर उनकी रेटिंग की गयी है। फेम इंडिया ने देश भर के सभी राज्य सरकारों के मंत्रिमंडलों का सर्वेक्षण प्रमुख रेटिंग एजेंसी एशिया पोस्ट से करवाया। इनके आकलन में कई महत्त्वपूर्ण पहलुओं को ध्यान में रखा गया. राज्यों के मुख्यमंत्रियों को इस सर्वे से बाहर रखा गया।

हम आगे भी समाज में सकारात्मक माहौल और सोच में बदलाव के लिए विभिन्न क्षेत्रों के आदर्श कार्य कर रहे लोगों को सर्वे और रेटिंग द्वारा सामने लाने का कार्य करते रहेंगे।

अनुरोध है फेम इंडिया के इस सकारात्मक मुहिम का आप भी हिस्सा बने और हमें सुझाव दें, हमारा मानना है कि सोच बदलने से ही बदलता है समाज।